नीतिशास्त्र और मानवीय सहसंबंध

मेन्स के लिये:

नीतिशास्त्र के आयाम, मानवीय गतिविधियों में नीतिशास्त्र के निर्धारक सिद्धांत, निजी और सार्वजनिक संबंधों में नीतिशास्त्र का महत्त्व।

नीतिशास्त्र का तात्पर्य:

- नीतिशास्त्र सिद्धांतों का एक समूह है जो हमारे निर्णयों को प्रभावित करता है और हमारे जीवन की दिशा और लक्ष्य निर्धारित करता है।
- एक समाज के अपने नैतिक मानदंडों कमानवीय कार्यों में नीतिशास्त्र की अवधारणा और सिद्धांत , निजी और सार्वजनिक संबंधों में नीतिशास्त्र का मानक सेट अपने लोगों के व्यवहार, निर्णयों और कार्यों के लिये एक मार्गदर्शक के रूप में कार्य करता है।
    - सिद्धांतों और आदर्शों का संरक्षण भी इसका एक हिस्सा है।
    - इसकी परिसीमा सिर्फ एक परंपरा या प्रथा का पालन करने से अधिक है अर्थात् सार्वभौमिक सत्य के संदर्भ में इन नियमों के अनुसंधान और मूल्यांकन की आवश्यकता होती है।

नीतिशास्त्र के आयाम:

- **वर्णनात्मक नीतिशास्त्र:**
    - यह इस बात से संबंधित है कि लोग वास्तव में क्या सही या गलत समझते हैं।
    - यह हमें एक व्यापक तस्वीर देता है कि लोग कैसे अपना जीवन जीते हैं, या उनका जीवन पैटर्न।
    - यह कुछ कलंक, परंपराओं या प्रथाओं का इतिहास प्रदान करता है।
- **मानकीय/आदर्शात्मक नीतिशास्त्र:**
    - नियामक नैतिकता को परिप्रेक्ष्य नैतिकता भी कहा जाता है।
    - यह मूल रूप से नैतिक मानदंड स्थापित करने का इरादा रखता है जो उचित और अनुचित व्यवहार को परिभाषित करता है।
    - यह नेक आचरण के लिये सबसे अच्छा पैमाना खोजने का एक प्रयास है।
    - व्यक्तियों को कैसे व्यवहार करना चाहिये यह नैतिक सिद्धांत के अध्ययन से निर्धारित होता है।
- **अधि नीतिशास्त्र:**
    - मुद्दे जो यह तय करते हैं कि कोई निश्चित मुद्दा या वस्तु नैतिक रूप से सही है या गलत, अधि नैतिकता की प्राथमिक चिंता है।
    - यह नैतिकता की निष्पक्षता से अधिक संबंधित है, न कि इस बात से कि कोई विशेष आचरण नैतिक है या अनैतिक।
    - आधुनिक दार्शनिकों द्वारा अधि नैतिकता को दो भागों में विभाजित किया गया है।
        - **गैर-संज्ञानात्मकता:** इस वैचारिक दृष्टिकोण के अनुसार, हम किसी भी चीज़ को सही या गलत के रूप में वर्गीकृत करते हैं, यह हमारे नैतिक ज्ञान का प्रतिबिंब है।
        - **संज्ञानात्मकवाद:** इस तरह की सोच इस बात पर जोर देती है कि कैसे तथ्य और आंकड़े नैतिक रूप से सही और गलत का निर्धारण करते हैं।
- **व्यावहारिक नीतिशास्त्र:**
    - यह नैतिकता का अनुशासन है जो गर्भपात, पशु अधिकार और इच्छामृत्यु जैसे विशिष्ट, विवादास्पद नैतिक चिंताओं की जाँच करता है। समकालीन मुद्दों पर नैतिक अवधारणाओं की समझ को लागू करना फायदेमंद है।

नीतिशास्त्र का सार:

- नीतिशास्त्र के केंद्र में स्वयं के अलावा किसी चीज या किसी अन्य के अर्थात् हमारी अपनी इच्छाओं और स्वार्थ के बारे में चिंता है। नैतिकता का संबंध अन्य लोगों के हितों से, समाज के हितों से, 'परम शुभ' से है। इस प्रकार, जब लोग नैतिक रूप से सोचते हैं तो वे अपने से परे किसी चीज़ को कुछ विचार दे रहे होते हैं। नैतिकता के सार को इस प्रकार समझा जा सकता है:
    - नैतिकता के दायरे में केवल स्वैच्छिक मानवीय क्रियाएँ शामिल हैं। इसका अर्थ है मनुष्य द्वारा होशपूर्वक, जानबूझकर और परिणाम की दृष्टि से किये गए कार्य। यह मानव आचरण के उस हिस्से पर अपना ध्यान केंद्रित करता है जिसके लिये मनुष्य की कुछ व्यक्तिगत ज़िम्मेदारी है।
    - यह मानकों का एक समूह है जिसे एक समाज सर्वोपरि रखता है और जो अपने सदस्यों के व्यवहार, पसंद और कार्यों का मार्गदर्शन करने में

मदद करता है।
- यह इस बारे में चतिति है कि क्या सही, उचति, न्यायसंगत या अच्छा है, हमें क्या करना चाहिये, न कि केवल सबसे स्वीकार्य या समीचीन क्या है।
- यह आचरण और सामाजिक व्यवस्था के लिये विभिन्नि विकल्पों में सन्निहिति सिद्धांतों का विश्लेषण और मूल्यांकन करने का प्रयास करता है।
- इसमें सार्वभौमिक मूल्यों जैसे सभी पुरुषों और महिलाओं की आवश्यक समानताएँ, मानव या प्राकृतिक अधिकार, कानून का पालन, स्वास्थ्य और सुरक्षा के लिये चिंता और, प्राकृतिक पर्यावरण का अध्ययन शामिल है।

मानव क्रिया में नैतिकता के निर्धारक और परिणाम:

- 'मानव क्रिया' नैतिकता का प्रारंभिक बिंदु है। किसी व्यक्ति के किसी भी कार्य की नैतिकता या अनैतिकता का निर्धारण करने में सबसे पहले विचार करने वाले बिंदुओं में से एक यह है कि यह एक सचेत मानवीय कार्य होना चाहिये, इससे पहले कि इसमें कोई नैतिक गुण हो।
- चूँकि पाचन, वृद्धि, शिराओं में रक्त की गति आदि हमारी इच्छा के वश में नहीं हैं, इसलिये उन्हें नैतिक कृत्यों के रूप में बिल्कुल भी नहीं कहा जाता है। वे एक मानव व्यक्ति के कार्य हैं, लेकिन उन्हें 'मानवीय कार्य' नहीं कहा जाता है।
- एक मानवीय कार्य वह है जो ज्ञान और स्वतंत्र इच्छा से आगे बढ़ता है। यदि किसी व्यक्ति के कार्य में पर्याप्त ज्ञान या स्वतंत्रता की कमी है, तो वह कार्य पूरी तरह से मानवीय नहीं है और इसलिये पूरी तरह से नैतिक नहीं है।
- इस प्रकार, सही और गलत का निर्णय केवल उन्हीं कार्यों पर पारित किया जा सकता है जो स्वैच्छिक हैं। उन्हें पर्याप्त ज्ञान के आधार पर कर्त्ता द्वारा अभिप्रेत होना चाहिये, अर्थात कार्य स्वैच्छिक होना चाहिये।
- हालाँकि, कुछ ऐसे कारक हैं जो मानवीय कार्यों की स्वैच्छिकता को कम या कम करते हैं। इन्हें सचेत मानव क्रिया के लिये बाधा कहा जाता है।
- **मानव क्रिया में नैतिकता के निर्धारक:**
    - मानव द्वारा किये गए कार्यों को वास्तव में मानवीय कार्य नहीं कहा जा सकता है, यदि उपरोक्त में से कोई भी स्थिति, अर्थात अज्ञानता, जुनून या हिंसा मौजूद है। यह कार्रवाई मानवीय नहीं है और इसलिये नैतिकता में जाँच के अधीन नहीं किया जा सकता है।
        - हालाँकि, जब कारण या ज्ञान शामिल होता है, जब कार्य स्वैच्छिक होते हैं, तो यह निर्धारित किया जा सकता है कि दिया गया मानव कार्य अच्छा है या बुरा। नैतिक धर्मशास्त्रियों के अनुसार हमारे कार्यों की नैतिक गुणवत्ता के कुछ निर्धारक हैं। ये हैं:
- **कार्रवाई की प्रकृति/उद्देश्य:**
    - **मानव कृत्यों की नैतिकता/अच्छाई को आँकने का एक मानदंड उसकी वस्तु/स्वभाव है**। प्रत्येक क्रिया का एक विशेष स्वभाव/सार होता है जो उसे अन्य क्रियाओं से अलग बनाता है। इस प्रकार निर्दिष्ट किया गया कोई कार्य, जब अपने आप में माना जाता है, अच्छा, बुरा या उदासीन हो सकता है। इस प्रकार, सड़क पर एक अंधे व्यक्ति की मदद करना अपने आप में एक अच्छा कार्य है, निन्दा करना अपने आप में बुरा है, और गोली चलाना सीखना अपने आप में एक उदासीन कार्य है।
    - हालाँकि, कुछ प्रकार के कार्य होते हैं जिन्हें इसके स्वभाव से ही आंतरिक रूप से बुरा/अनैतिक कहा जाता है, अर्थात इसके अंतर्निहिति नैतिक अर्थ से। एक आंतरिक रूप से बुरा कार्य एक ऐसा कार्य है जो हमेशा बुरा होता है, हमेशा असंगत होता है। यह कभी भी अच्छा नहीं होता है, कभी उपयुक्त नहीं होता है, और कभी भी उपयोगी नहीं होता है, भले ही एक इसको करने वाले के गलत इरादे और परिस्थितियों के बावजूद।
        - कारण यह भी प्रमाणित करता है कि कुछ मानवीय कृत्य अपने स्वभाव से ही अच्छे होने में असमर्थ हैं क्योंकि वे अच्छे की धारणा का मौलिक रूप से खंडन करते हैं, उदाहरण के लिये, बलात्कार, निर्दोष बच्चों की हत्या, या ईशनिंदा।
    - इस बीच, गर्भपात, भ्रूण स्टेम सेल अनुसंधान, समान लिंग विवाह, इच्छामृत्यु आदि जैसे कुछ विशिष्ट कार्य हैं जिन्हें कुछ समाजों/धर्मों के नैतिक संहिताओं के अनुसार आंतरिक रूप से अनैतिक माना जाता है। भले ही इरादे कभी-कभी अच्छे हों, और परिस्थितियाँ अक्सर कठिन हों, इन कृत्यों को गैर-परक्राम्य माना जाता है और इसलिये ऐसे समाजों द्वारा दंडनीय हैं।
        - हालाँकि, परिस्थितियों और इरादों पर विचार करने से पहले किसी कार्य को नैतिक रूप से बुरा मानने के ऐसे उदाहरण कुछ अन्य समाजों में संदिग्ध, बहस योग्य या अमान्य भी हो सकते हैं।
- **कार्रवाई का इरादा/उद्देश्य:**
    - कार्य या तो अच्छे या बुरे हो सकते हैं, यह इस पर निर्भर करता है कि हम उन्हें क्यों करते हैं। अरस्तू और टेलीलॉजिकल सिद्धांतकारों के अनुसार प्रत्येक मानवीय क्रिया, चाहे कितनी भी तुच्छ क्यों न हो, इसके पीछे कोई न कोई उद्देश्य/उद्देश्य/इरादा होता है। ऐसे सभी कार्यों के लिये एक व्यक्ति की नैतिक ज़िम्मेदारी होती है (जानबूझकर या चूक, किसी कार्रवाई को करना या रोकना, एक निश्चिति परिणाम लाने की कोशिश करना या प्रयास करना) जिसमें एजेंट की दूरदर्शिता, कारण, इच्छा या प्रेरणा शामिल होती है। इसलिये, कार्रवाई करने वाले व्यक्ति का इरादा किसी कार्रवाई के नैतिक मूल्यांकन के लिये आवश्यक तत्व है। जिस तरह से उद्देश्य/इरादा किसी कार्रवाई की नैतिकता को प्रभावित करता है, वह नीचे दिया गया है:
        - एक मानवीय कार्य के लिये नैतिक रूप से अच्छा होने के लिये एजेंट या कर्त्ता के इरादे अच्छे होने चाहिये।
        - एक एजेंट का मकसद स्वभाव से नैतिक रूप से अच्छे कार्य को नैतिक रूप से बुरे कार्य में बदल सकता है।
        - एक अच्छा इरादा, चाहे कितना भी अच्छा क्यों न हो, नैतिक रूप से कुछ अच्छा करने के लिये अनिवार्य रूप से अनैतिक कुछ नहीं बनाता है।
        - जिस कार्य में एक अच्छी सोच होती है वह अपने उद्देश्य के कारण कमोबेश अच्छी हो सकती है।
        - एक कार्य जो स्वाभाविक रूप से गलत है, नैतिक एजेंट के उद्देश्य के आधार पर अधिक या कम गलत हो सकता है।
- **कार्रवाई की परिस्थितियाँ:**
    - प्रत्येक मानव कार्य एक ठोस क्रम में विशेष परिस्थितियों में किया जाता है। इसलिये परिस्थितियाँ किसी कार्रवाई की नैतिकता को प्रभावित कर सकती हैं और नैतिक गुणवत्ता में कुछ जोड़ सकती हैं। मानव क्रिया की परिस्थितियों में ऐसी चीजें शामिल होती हैं जैसे किसी विशेष समय पर, किसी विशेष स्थान पर, किसी विशेष एजेंट द्वारा, विशेष तरीके से किया जाने वाला कार्य। अलग-अलग परिस्थितियाँ कैसे क्रियाओं की सही या गलत होने को बदल देती हैं, इसे नीचे उल्लिखित के रूप में समझा जा सकता है:

- कभी-कभी परस्थितियाँ कार्रवाई की नैतिकता को केवल डिग्री में प्रभावित करती हैं, अर्थात वे मानवीय कृत्यों की नैतिक अच्छाई या बुराई को बढ़ाने या घटाने में योगदान करती हैं। उदाहरण के लिये, चोरी करना वस्तु से बुरा है, किसी दुर्लभ वस्तु की चोरी करना/या किसी बेसहारा/गरीब से चोरी करना कार्रवाई के द्वेष को बढ़ाता है। दूसरी ओर, यदि कोई लुटेरा गरीबों की मदद के लिये अमीरों से चोरी करके रॉबिन हुड की तरह काम करता है, तो उसकी डकैती कम अनैतिक हो जाती है।
- कुछ परस्थितियाँ किसी क्रिया को कब और कहाँ घटित होने के प्रभाव से एक नए प्रकार की अच्छाई या बुराई प्रदान करती हैं।
    - **कब** : चाहे वह युद्ध के दौरान किया जाए या शांति के दौरान। उदाहरण के लिये, एक खुफिया अधिकारी के अपराध में वृद्धि होती है, जो युद्ध के समय दुश्मन देश द्वारा पकड़े जाने पर, हिंसा के आगे झुक जाता है और अत्यधिक गोपनीय जानकारी का खुलासा करता है जो राष्ट्रीय रहस्यों को गंभीर रूप से प्रभावित करता है।
    - **कहाँ पर:** इसी तरह, जहाँ कार्रवाई होती है, उसकी नैतिकता प्रभावित हो सकती है। उदाहरण के लिये, एक चर्च/कैथेड्रल में एक हत्या खुद को हत्या के लिये एक अतिरिक्त नैतिक बुराई जोड़ती है क्योंकि इसमें पूजा के एक पवित्र स्थान की अपवित्रता और इसलिये अपवित्रता की अतिरिक्त बुराई शामिल है।
- परस्थितियाँ एजेंट की ज़िम्मेदारी को कम या कम भी कर सकती हैं। उदाहरण के लिये, जो महिला अपनी शुद्धता पर हमला करने वाले व्यक्ति को मारती है, वह किसी की हत्या के अपराध से मुक्त हो जाती है।

- इस प्रकार, चूँकि सभी मानवीय क्रियाएँ एक निश्चित समय और एक निश्चित स्थान पर होती हैं, इसलिये किसी भी मानवीय कृत्य की नैतिक गुणवत्ता का मूल्यांकन करने में परस्थितियों पर हमेशा विचार किया जाना चाहिये। इस बीच, यह समझा जाना चाहिये कि 'नैतिक रूप से अच्छे कार्य के लिये वस्तु की अच्छाई, अंत की और परस्थितियों की एक साथ आवश्यकता होती है'। यदि तीनों में से कोई एक दुष्ट है, तो विचाराधीन मानवीय कृत्य बुरा है और इससे बचना चाहिये।
    - मानव क्रिया की नैतिकता को प्रभावित/निर्धारित करने वाले एजेंट:
        - व्यक्तिगत व्यक्तित्व लक्षण
        - व्यक्ति की संस्कृति या देश
        - संगठन/उद्योग
- **मानव क्रिया में नैतिकता के परिणाम:**
    - परिणाम एक क्रिया के कारण होने वाले प्रभाव हैं। हमारे कई कार्य, निर्णय और दैनिक जीवन के चयन परिणामों को ध्यान में रखकर किये जाते हैं। मनुष्य स्वभाव से ही परिणामोन्मुखी होता है। इसका मतलब है कि हमारे पास इच्छित परिणाम प्राप्त करने की प्रवृत्ति है और इन परिणामों/परिणामों की गुणवत्ता इस बात पर निर्भर करती है कि उनमें कितनी अच्छाई है।
    - किसी कार्य को उसके परिणाम के आधार पर अच्छा या बुरा माना जाता है। अगर दूसरे लोग पीड़ित हैं, तो यह गलत है। लोगों को फायदा हो तो सही। परिणाम, नैतिक आचरण के हमारे विश्लेषण में एक महत्त्वपूर्ण विचार हैं। जिन मामलों में किसी कार्रवाई के परिणाम कर्त्ता के लिये ज़िम्मेदार होते हैं, जिन्हें प्रभाव के लिये ज़िम्मेदार ठहराया जाता है, उनमें निम्नलिखित शर्तें शामिल होती हैं:
        - यदि कर्त्ता नोटिस रखता है (भले ही अस्पष्ट रूप से) या आगे जानता है कि किसी विशेष विकल्प या कार्रवाई के परिणाम क्या होंगे, तो यह माना जाता है कि उसने प्रभाव डाला है। उदाहरण के लिये, एक बुरे प्रभाव के मामले में, यदि एक शिकारी किसी वस्तु को देखता है, लेकिन यह सुनिश्चित नहीं है कि यह एक आदमी है या हिरण है। शिकारी अस्पष्ट रूप से अनुमान लगाता है कि गोली चलाने के परिणाम हिरण की हत्या या पुरुषों की हत्या के क्या परिणाम हो सकते हैं। यदि शिकारी किसी भी तरह से गोली चलाने का विकल्प चुनता है, तो उसने प्रभाव की इच्छा की है, चाहे हिरण की हत्या या पुरुषों की हत्या।
        - यदि अभिनेता कार्य नहीं करता है, लेकिन किसी अन्य को ऐसा करने के लिये प्रेरित करता है (मदद, प्रोत्साहन या अनुनय के रूप में), तो पहला व्यक्ति अभी भी नैतिक रूप से अधिनियम के परिणामों के लिये इस हद तक ज़िम्मेदार है कि उसने उन परिणामों को देखा या नहीं . उदाहरण के लिये, यदि कोई राजनेता एक संवेदनशील क्षेत्र में सांप्रदायिक हिंसा को भड़काने वाला अभद्र भाषा देता है, तो उसे गलत कार्य करने का दोषी माना जाएगा।
        - यदि कोई व्यक्ति चुप रहता है या कोई कार्रवाई नहीं करता है - यदि कोई व्यक्ति सड़क दुर्घटना का गवाह बनता है और पीड़ित को गंभीर स्थिति में मदद करने से रोकता है, तो वह एक अच्छे व्यक्ति के कर्तव्य को निभाने में विफल रहता है, इसलिये चूक की त्रुटियों और बुरे परिणामों का दोषी है (पीड़ित की मृत्यु) जो अनुसरण करती है।
- इस प्रकार, जो कुछ भी एक नैतिक कार्य के लिये आवश्यक स्वतंत्रता और ज्ञान को बढ़ाता, घटाता या नष्ट करता है, वह भी अभिकर्त्ता की ज़िम्मेदारी को बढ़ाता, घटाता या नष्ट करता है।

निजी और सार्वजनिक संबंधों में नैतिकता की क्रियाशीलता:

- **सार्वजनिक संबंधों में नैतिकता:**
    - नैतिकता का संबंध सही और गलत जैसी धारणाओं के साथ-साथ विभिन्न सामाजिक तथा संगठनात्मक स्थितियों में अच्छे और बुरे मानव व्यवहार से है।
    - **निजी संबंध:**
        - आम जनता के साथ एक राजनेता या नौकरशाह की बातचीत या अपने मरीजों के साथ डॉक्टर के रिश्ते के विपरीत, एक व्यक्ति के निजी रिश्ते, जैसे शादी, परिवार, रिश्तेदारी और दोस्ती, निजी होते हैं। निजी संबंध अधिक व्यक्तिगत होते हैं।
    - **निजी संबंधों की विशेषताएँ:**
        - जीवनसाथी से विश्वासयोग्य, प्रेममय और स्नेही होने की अपेक्षा करना।
        - अपूर्णताओं के लिये अधिक सहिष्णुता।
        - वे तुलनात्मक रूप से लंबे समय तक चलने वाले हैं।
        - निजी संबंध अक्सर विरासत में मिले या दिये जाते हैं।
- सामान्यतया, व्यक्तिगत गुण, सार्वभौमिक मानवीय मूल्य, धर्म, सामाजिक परंपराएँ और राष्ट्र के कानून निजी बातचीत में नैतिकता का मार्गदर्शन करते हैं। नैतिकता द्वारा निर्देशित कार्यों को सार्वजनिक रूप से उचित ठहराना आसान होता है। नैतिक मानकों और धार्मिक और संवैधानिक विचारों

वाली संस्थाओं का भी भारत में व्यक्तिगत संबंधों में नैतिक मुद्दों पर प्रभाव पड़ता है।

- **सार्वजनिक संबंधों में नैतिकता** :
  - जनसंपर्क अब एक महत्त्वपूर्ण कार्य बनता जा रहा है जो प्रबंधन के निर्णयों को प्रभावित करता है और हर गैर-लाभकारी या लाभ कमाने वाले संगठन में जनमत को प्रभावित करता है। जनमत की निगरानी और मूल्यांकन के साथ-साथ एक कंपनी तथा उसके ग्राहकों के बीच सद्भावना एवं समझ को बनाए रखना जनसंपर्क के प्रबंधन कार्य का हिस्सा है।
  - **सार्वजनिक संबंधों की विशेषताएँ:**
    - सार्वजनिक रूप से, ऐसे लोग होते हैं जो लोगों के साथ व्यवहार करने से अलग होते हैं।
    - सार्वजनिक संबंधों में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने की संभावना है।
    - काम या लाभ के कारण जुड़ाव।
    - सम्मान की अपेक्षा।
    - सार्वजनिक संबंधों में एक विशेष प्रकार की भूमिका निभाई जाती है इसलिये एक व्यक्ति जो कहता है उसके लिये ज़िम्मेदार होता है।
    - जवाबदेही वह है जो एक व्यक्ति कहता है और करता है।

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/ethics-and-human-interface